कबीर साहेब की शब्दावली

[भाग चौथा]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

हिन्दी महाभारत

सचित्र व सजिल्द

[लेखक—पं० महाबीर प्रसाद मालवीय]

यह महाभारत डबल क्राउन अठपेजी साइज़ के ४५० पृष्ठों में उमदा सफ़ेद काग़ज़ पर छपा है। रंग बिरंगे अति सुन्दर चित्रों से सजधज कर और सरल हिन्दी भाषा में अनूदित होकर प्रकाशित हुआ है।

इसके उपसंहार में महाराज युधिष्ठिर से लेकर पृथ्वीराज चौहान के वंशजों तक अर्थात १७७१ वर्ष दिल्ली के राज्यासन पर आर्य्य राजाओं का शासन काल बड़ी खोज के साथ लिखा गया है। मूल्य लागत मात्र ३)

पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ चौथा भाग ॥

जिस में

उन महात्मा का ककहरा और फुटकल शब्द सुंदर और अनूठी रागों में (जैसे राग गारी, राग जँतसार) छपे हैं। और गूढ़ शब्दों के अर्थ नोट में लिखे हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर प्रेस, में प्रकाशित हुई।

सन् १९२६ ई०

तृतीय एडिशन] [दाम =)

Printed and Published at the Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

संतबानी

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं। कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है, उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है, और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठवासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है, जिस के विषय में श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"यह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है, जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिन में प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई हैं। उनके नाम और दाम सूची से जो कि इस पुस्तक के पीछे है देखिये।

हमने 'मनोरमा' नामक सचित्र मासिक पत्रिका भी निकालना आरम्भ कर दिया है। साहित्य सेवा के साथ ही साथ मनोरञ्जक लेख कहानियाँ और ऐसे महात्माओं के कवित्त दोहे सवैये जो स्फुट हैं और पुस्तक के रूप में नहीं निकाली जा सकतीं निरंतर छपती हैं। वार्षिक मूल्य ५) और छः माही ३) है।

भक्तशिरोमणि

मनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

तुलसी-ग्रन्थावली ।

(दो भागों में और खूब बड़े २ अक्षरों में)

गोस्वामी तुलसीदासजी के ग्रन्थों के सम्बन्ध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। उनके महत्व को पढ़े अनपढ़े भारतवासी मात्र भलीभाँति जानते हैं। गोस्वामीजी के बनाये हुए छोटे बड़े बारह ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। रामलला नहछू, वैराग्य-सन्दीपिनी, बरवै रामायण, पार्वती-मङ्गल, जानकी-मङ्गल, रामाज्ञा प्रश्नावली, दोहावली, कवित्त रामायण, गीतावली-रामायण, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका और रामचरितमानस। इन बारहवों ग्रन्थों को मूल स्वच्छ चिकने कागज़ पर शुद्धता-पूर्वक बड़े बड़े अक्षरों में हमने छपवाया है। नीचे कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है, जिससे भावार्थ समझने में बड़ी सुगमता हो गयी है। इनमें से ग्यारह ग्रन्थों की एक जिल्द है जिसमें लगभग ५८० पृष्ठ हैं। मूल्य सजिल्द केवल ५) और यह दूसरी जिल्द केवल रामचरित मानस की सचित्र और सटीक पृष्ठ १३०० का मूल्य ४॥) और चिकने उमदा कागज़ पर ६॥) है।

मिलने का पता

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

सूचीपत्र

कबीर साहिब की शब्दावली

॥ चौथा भाग ॥

राग मंगल

(१)

पिया मिलन की आस, रहौं कब लौं खड़ी।
ऊंचे चढ़ि नहिं जाय, मनैं लज्जा भरी ॥ १ ॥
पाँव नहीं ठहराय, चढ़ूँ गिरि गिरि पड़ूँ।
फिरि फिरि चढ़हुँ सम्हारि, चरन आगे धरूँ ॥ २ ॥
अंग अंग थहराय, तो बहु बिधि डरि रहूँ।
कर्म कपट मग घेरि, तो भ्रम मैं भुलि रहूँ ॥ ३ ॥
निपट बारि अनारि, तो झीनी गैल है ॥ ४ ॥
अटपट चाल तुम्हारि, मिलन कस होइ है।
तेजो[1] कुमति बिकार, सुमति गहि लीजिये।
सतगुरु सब्द सम्हारि, चरन चित दीजिये ॥ ५ ॥
अंतर पट दे खोल, सब्द उर लाव री।
दिल बिच दास कबीर, मिलैं तोहि बावरी ॥ ६ ॥

(२)

उठो सोहंगम नारि, प्रीति पिया सौं करो।
यह उरले[2] ब्योहार, दूर दुरमति धरो ॥ १ ॥
पाँच चोर बड़ जोर, संगि एते घने।
इन ठगियन के साथ, मुसै घर निसु दिने ॥ २ ॥

---

(१) तजो, छोड़ो। (२) संसारी।

सोवत जागत चोर, करै चोरी घनी।
आपु भये कुतवाल, भली बिधि लूटहीं ॥ ३॥
द्वादस नगर मँझार, पुरुष इक देखिये।
सोभा अगम अपार, सुरति छबि पेखिये ॥ ४ ॥
होत सब्द घनघोर, संख धुनि अति घनी।
तंतन की झनकार, बजत झीनी झिनी ॥ ५ ॥
है कोइ महरम साध, भले पहिचानिये।
सतगुरु कहे कबीर, संत की बानि ये ॥ ६ ॥

(३)

गुन करु बवरी गुन करु, जब लग नैहर बास हो।
पुनि धनि जैहो ससुरे, कंत पियारे पास हो ॥ १ ॥
जब लग राज पिता घर, गुन करि लेहु हो।
सासु ननद के बुलवन, उत्तर का देहु हो ॥ २ ॥
आये भाट बराम्हन, लगन धराइन हो।
लगन सुनत गवने कै, मुँह कुम्हिलाइन हो ॥ ३ ॥
बाजन बाजै गहगहा, नगर उठै झनकार हो।
प्रीतम कहूँ न देखल, आयो चालनहार हो ॥ ४ ॥
लै रे उतारिन तेहि घर, जहँ दिस न दुवार हो।
मन मन झुरवै दुलहिनि, काह कीन्ह करतार हो ॥ ५ ॥
जो मैं जनतिउँ ऐसन, गुन करि लेतिउँ हो।
जातिउँ साहिब के देसवाँ, परम सुख पौतिउँ हो ॥ ६॥
चेति ले बवरी चेति ले, चेति लेहु दिन चारी हो।
यह संगत सब छूटि है, कहत कबीर बिचारी हो ॥ ७ ॥

(४)

मंगल एक अनूप,, संत जन गावहीं।
उपजै प्रेम बिलास, परम सुख पावहीं ॥ १ ॥

सतगुरु बिप्र बुलाय, तो लगन लिखावहीं।
संत कुटुम परिवार, तो मंगल गावहीं ॥ २ ॥
बहु बिधि आरति साजि, तो चौक पुरावहीं।
मोतियन थार भराइ के, कलस लेसावहीं ॥ ३ ॥
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीं।
जेहि कुल उपजे संत, परम पद पावहीं ॥ ४ ॥
मिटो करम को अंक, जबै आगम भयो।
पायो सूरति सोहं, संसय सब गयो ॥ ५ ॥
भक्ति हेत चित लाय, तो आरति उर धरो।
तजि पाखंड अभिमान, तो दुरमति परिहरो ॥ ६ ॥
तन मन धन औ प्रान, निछावर कीजिये।
त्रिगुन फन्द निरुवारि, पान निज लीजिये ॥ ७ ॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीं।
कहैं कबीर समुझाय, बहुरि नहिं आवहीं ॥ ८ ॥

(५)

पूरनमासी आदि, जो मंगल गाइये।
सतगुरु के पद परसि, परम पद पाइये ॥ १ ॥
प्रथमे मँदिल झराइ के, चँदन लिपाइये।
नूतन बस्तर आनि के, चँदवा तनाइये ॥ २ ॥
(तब) पूरन गुरु के हेत, तो आसन बिछाइये।
गुरु के चरन प्रछालि, तहाँ बैठाइये ॥ ३ ॥
गज मोतियन को चौक, सो तहाँ पुराइये।
ता पर नरियर धोति, मिष्टान्न धराइये ॥ ४ ॥
केरा और कपूर, तो बहु बिधि लाइये।
अष्ट सुगंध सुपारि, तो पान मँगा

पल्लौ सहित सो कलसा, जोति बराइये ।
ताल मृदंग बजाइ के, मंगल गाइये ॥ ६ ॥
साधु संत सँग लैके, आरति उतारिये ।
आरति करि पुनि नरियर, तबहिं मोराइये ॥ ७ ॥
पुरुष को भोग लगाइ, सखा मिलि पाइये ।
जुग जुग छुधा बुझाइ, तो पाइ अघाइये ॥ ८ ॥
परमानन्दित होय, तो गुरुहिं मनाइये ।
कहै कबीर सत भाय, तो लोक सिधाइये ॥ ९ ॥

(६)

सत्त सुकृत सत नाम, सुमिरु नर प्रानी हो ।
सुमति से रचहु बियाह, कुमति घर छाड़ी हो ॥ १ ॥
सत्त सुकृत के माँड़ो, तो रुचि रुचि छावो हो ।
सतगुरु बिप्र बुलाय कै, कलस धरावो हो ॥ २ ॥
पहिलो भँवरिया बेद, पढ़ै मुनि ज्ञानी हो ।
दुसरि भँवरिया तिरथ, जा को निरमल पानी हो ॥३॥
तिसरी भँवरिया भक्ति, दुबिधा जिनि लावो हो ।
चौथो भँवरिया प्रेम, प्रतीत बढ़ावो हो ॥ ४ ॥
पँचईं भँवरिया अलख, सँग सुमति सयानी हो ।
छठईं भँवरिया छिमा, जहँ अमी नहानी हो ॥ ५ ॥
सतईं भँवरियासाहिबमिले, मिटि आवा जानी हो ।
प्रेम मगन भइ भाँवर, उठत धुन तानी हो ॥ ६ ॥
सतगुर गाँठि प्रेम की, छोड़ि ना छूटै हो ।
लागि रहो गुरु ज्ञान, डोरि ना टूटै हो ॥ ७ ॥
दास कबीर कै मंगल, जो कोइ गावै हो ।
बसै सत लोक में जाइ, अमर पद पावै हो ॥ ८ ॥

(७)

मानुष जन्म अमोल, सुकृत को धाइये।
सुरति कुवारी कन्या, हंसा सँग ब्याहिये ॥ १ ॥
सतगुरु बिप्र बुलाइ के, लगन धराइये।
बेगै कन्या बराइ, बिलँब ना लाइये ॥ २ ॥
पाँच पचीस तरुनिया[1], तो मंगल गाइये।
चौरासी के दुक्ख, बहुरि ना लाइये ॥ ३ ॥
सुरति पुरुष सँग बैठि, हाथ दोउ जोरिये।
जम से तिनुका तोरि, भँवरि भल फेरिये ॥ ४ ॥
सुरति कियो है सिंगार, पिया पहँ जाइये।
जनम करम के अंक, सो तुरत मिटाइये ॥ ५ ॥
हंसा कियो है बिचार, सुरति सों अस कहो।
जुग जुग कन्या कुँवारि, एतक दिन कहँ रहो ॥ ६ ॥
सुरति कियो है प्रनाम, पिया तुम सत कहो।
सतगुरु कन्या कुँवारि, एतक दिन तहँ रहो ॥ ७ ॥
प्रेम पुरुष के साज, अखंड लेखा नहीं।
अमृत प्याला पियै, अधर महँ झूलही ॥ ८ ॥
पान पर्वाना पाय, तो नाम सुनावही।
सतगुरु कहैं कबीर, अमर सुख पावही ॥ ९ ॥

(८)

आजु लगे पुनवासी, तो मंगल गाइये।
बस्तर सेत आनि के, चँदवा तनाइये ॥ १ ॥
प्रेम कै मंदिल झारि, चँदन छिरकाइये।
सतगुरु पूरा होय, तो चौक पुराइये ॥ २ ॥
जाजिम गद्दी बिछाइ के, तकिया सजाइये।
गुरु के चरन पखारि, तो आसन कराइये ॥ ३ ॥

(१) युवा स्त्री।

गज मोती मँगवाइ के, चौक पुराइये।
ता पर मेवा मिष्ठान्न, तो पान चढ़ाइये ॥ ४ ॥
पल्लौ सहित तहँ कलस, तो आनि धराइये।
पाँच जोति कै दीपक, तहवाँ बराइये ॥ ५ ॥
जल थल सील सुधारि, तो जोति जगाइये।
साध संत मिलि आइके, आरति उतारिये ॥ ६ ॥
ताल मृदंग बजाइ, तो मंगल गाइये।
आरति करु पुनवासी, तो नरियर मोरिये ॥ ७ ॥
जम सों तिनुका तोरि, तो फंद छुड़ाइये।
पुरुष को भोग लगाइ, हंसा मिलि पाइये ॥ ८ ॥
जुग जुग छुधा बुझाइ के, गुरु को मनाइये।
कहँ कबीर सत भाव, सो लोक सिधाइये ॥ ९ ॥

(४)

सतगुरु जौहरि आय, तो मानिक लाइया।
काया नगर मँझारि, बजार लगाइया ॥ १ ॥
चहुँ मुख लागि दुकान, तो झिलमिल ह्वै रहे।
पारख सौदा बिसाहि[1], अधर डोरि झुलि रहे ॥२॥
जिन जिन हंसा गाहक, बस्तु बिसाहिया।
पाया सब्द अमोल, बहुरि नहिं आइया ॥ ३ ॥
बारहबानी[2] के ज्ञान, तो सोई सुरंग है।
निर्गुन सब्द अमोल, साहिब को अंग है ॥ ४ ॥
करि ले सोरहो सिंगार, तो पिया को रिझाइये।
दिल बिच दास कबीर, हंसा समुझाइये ॥ ५ ॥

---

(१) मोल ले। (२) ख़ालिस सोना।

(१०)

साहिब को नाम अखंड, और सब खंड है ।
खंड है मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥
नारी सुत धन धाम, सो जीवन बंध है ।
लख चौरासी जीव, परे जम फंद है ॥ २ ॥
चंचल मन करु थार, तबै भल रंग है ।
उलटि निरंतर पोव, तो अमृत संग है ॥ ३ ॥
जिन कै साहिब से नेह, सोई निरबंध है ।
उन साधन के संग, सदा आनंद है ॥ ४ ॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है ।
कहैं कबीर चित चेतो, जक्त पतंग है ॥ ५ ॥

(११)

[पंचायन मंगल]

सत्त सुकृत सत नामको, आदि मनाइये ।
सुर्त जोग-संतायन[1], निसि दिन ध्याइये ॥
सतगुरु चरन मनाय, परम पद पाइये ।
करि दंडवत प्रनाम, तो मंगल गाइये ॥
गावै जो मंगल कामिनी, जहँ सत्त सीतल थान है ।
परम पावन ठाम अबिचल, जहँ ससि सुरजकीखान है ॥
मानिक पुर इकगाँव अबिचल, जहँ न रैन बिहानि है ।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है ॥१॥
अष्ट खंड जहँ कामिनि, आरति साजहीं ।
चार भानु की सोभा, अंग बिराजहीं ॥
दृष्टि भाव जहँ होत, हंस सुख पावहीं ॥
हंसन हंस बिलास, कामिनि साचि[2] मानहीं ॥

---

(१) कबीर साहिब । (२) प्रीति भाव ।

साँचि मानि कामिनि सुक्ख, हंसा आगे को पग धारहीं।
सुख सागर सुख बास में, जहँ सुकृत दरस निहारहीं॥
पतित-पावन भये हंसा, काया सोरह भान है।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥२॥

सुख सागर की सोभा, कहा बिसेखिये।
कोटिन रबि चहुँ ओर, उदय तहँ पेखिये॥
धरनिअकास जहाँनहिं, हीरा जगमगै।
उहवाँ दीनदयाल, हंस के सँग लगै॥

सँग लागि उहवाँ हंस के, कहैं तुम हमें भल चीन्ह हो॥
अंबु करि सो दीप दिखावों, प्रथम पुर्ष जो कीन्ह हो।
असंख रबिऔकोटि दामिनि, पुहुप सेज अरघान[1] है॥
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥

आदि अंत जोग-जीत, हंस के सँग लगे।
पंकज[2] करिय अँजोर, होत साहिब मिले॥
दोउ कर जोरि मनाय, बहुत बिनती करी॥
साहिब दरसन देव, हंस सरधा धरी॥

दया कीन्हा पुर्ष बिहँसे, मस्तक दरस दिखाइ हो।
अमृत फल जब चार दीन्हा, सकल हंस मिलि पाइ हो॥
अटल काया जब भई, मंजिल[3] करी अस्थान है।
कहै कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥४॥

सदा बसंत जहँ फूलो, कुंज सुहावहीं।
अछै बृच्छ तर हंसा, सेज बिछावहीं॥
चहुँ दिसि हंस की पाँती, हीरा जगमगै।
सोरह रबि को रूप, अंग में चमकहीं॥

---

(१) अति सुगंधित। (२) कँवल। (३) ठिकाना।

अंग हंसा चमक सोभा, सुर सोरह पावहीं।
धन सतगुरु को सार बोरा, पुर्ष दरस दिखावहीं॥
हंस सुजन जन अंस भेंटे, हंस को पहिचानि है।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥५॥

(१२)

[बेदी]

लगन लगी सत लोक, सुकृत मन भावहीं।
सुफल मनोरथ होय, तो मंगल गावहीं॥१॥
चलु सखि सुरति संजोय, अगम घर उठि चलो।
हंस सरूप सँवारि, पुरुष सोँ तुम मिलो॥२॥
कनक पत्र पर अंक, अनूपम अति कियो।
तुमहिं सकल संदेस, लगन पिय लिख दियो॥३॥
लिखि दियो सब्द अमोल, सोहंग सुहावना।
पूरन परम-निधान, ताहि बल जम जिता॥४॥
तत करनी कर तेल, हरदि हित लावहीं।
कंकन नेह बँधाय, मधुर धुन गावहीं॥५॥
अच्छत थार भराय, तो चौक पुरावहीं।
हीरा हंस बिठाय, तो सब्द सुनावहीं॥६॥
कंचन खंभ अँजोर, अधर चारो जुगा।
बाजत अनहद तूर, सेत मंडप छगा॥७॥
अगर अमी भरि कुम्भ, रतन चौरी रचा।
हंस पढ़ैं तहँ सब्द, मुक्ति बेदी रचो॥८॥
हस्त लिये सत केल, ज्ञान गढ़ बंधना।
मोच्छ सरूपी मौर, सीस सुन्दर बना॥९॥

सुरति पुरुष सोँ मेल, ते भाँवरि परि गई।
अमर तिलक ताम्बूल, सुघर माला दई ॥१०॥
दीन्हो सुरति सुहाग, पदारथ चारि को।
निस दिन ज्ञान बिचार, सब्द निर्वार को ॥११॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीँ।
कहैँ कबीर समुझाय, बहुरि नहिँ आवहीँ ॥१२॥

॥ राग गारी ॥

सतगुरु साहिब पाहुन आये, का ले करौँ मेहमानी जी ॥१॥
निरति के गँडुवा गंगाजल पानी, परसे सुमति सयानी जी ॥२॥
प्रथम लालसा लुचई[१] आई, जुगत जलेबी आनी जी ॥३॥
भाव कि भाजी सील कि सेमा, बने कराल करेला जी ॥४॥
हिय कै हीँग हृदय कै हरदी, तत्त के तेल बघारे जी ॥५॥
डारे धोइ बिचार के जल से, करमन कै करुआई जी ॥६॥
यह जेवनार रच्यो घट भीतर, सतगुरु न्योति बुलाये जी ॥७॥
जेवन बैठे साहिब मोरे, उठत प्रेम रस गारी जी ॥८॥
कहैँ कबीर गारी की महिमा, उपमा बरनि न जाई जी ॥९॥

(२)

जो तूँ अपने पिय की प्यारी, पिया कारन सिंगार करो ॥टेक॥
जा के जुगुत की ककही, करम केस निरुवार करो।
जा के व्रत के तेल, प्रेम कि डोरी से चोटी गुहो ॥१॥

---

(१) पूरी।

कहैं कबीर बघेल[१] सोँ, सुन साजना ।
रानी इन्द्रमती सरदार, संत सुन साजना ॥७॥

॥ राग झूलना ॥

(१)

करेगा सोई करता ने हुकुम किया,
सब्द का संग समसेर बंका ।
ज्ञान का चौंर ले प्रेम का पंखा ले,
खैंच के तेग छोड़ाव संका ॥१॥
कड़ी कमान जब ऐंठि के खैंचिया,
तीन बेर टनकार सहज टंका ।
मगन मुसक्यात गगन में कूदिया,
ढोल कर बाग मैदान हंका ॥ २ ॥
पाँच पच्चीस औ तीन भागा फिरै,
बड़े सहुकार औ राव रंका ।
कहैं कबीर कोउ संत जन जौहरी,
बड़े मैदान मोँ दियो डंका ॥ ३ ॥

(२)

खुदी को छाड़ि खुदाय की याद कर,
वो खुदाय क्या दूर है जी ॥ १ ॥
खुद बोलते को तहकीत[२] करि ले,
हर दम हजूर जरूर है जी ॥ २ ॥

(१), बघेलखंड के निवासी धर्म्मदास जी । (२) तहक़ीक ।

ठौर ठौर क्या भटकत फिरो,
करो गौर तुम हीं में नूर है जी ॥ ३ ॥
कबीर का कहना मानि ले अब,
परवाना सहित मंजूर है जी ॥ ४ ॥

(३)

चलु रे जीव जहँ हंस को देस है,
बसत कबीर आनंद सोई ।
काल पहुँचै नहीं सोग ब्यापै नहीं,
रहैगा हंस तहँ संग होई ॥ १ ॥
यह परपंच है सकल जाहि को,
ता में रहे का पार पावै ।
कठिन दरियाव जहँ जीव सब बाझिया,
माया रूप धरि आपै खेलावै ॥ २ ॥
[तहँ] खेलावै सिकार जम त्रिगुन के फंद में,
बाँधि के लेत सब जीव मारी ।
मोह के रूप तहँ नारि इक ठाढ़ि है,
जहाँ तुम जाहु तहँ मारि डारी ॥ ३ ॥
तेहि देखि सब जीव जल के सरूप भे,
तदपि परतीत कोइ नाहिं पाई ।
कहैं कबीर परतीत कर सब्द की,
काम औ क्रोध कमान तोरी ॥ ४ ॥

॥ राग कहरा ॥

(१)

सुनो सयानी अकथ कहानी, गुरु अपने का सनेहा हो ॥१॥
जो पिय मारै औ झझकारै, बाहर पगु ना दीन्हा हो ॥२॥

निरत पिया को अंतर ता को, सब्द नेह ना छूटै हो ॥३॥
जैसे डोरी उड़ै अकासा, सब्द डोरि नहिँ टूटै हो ॥४॥
डोरी टूटे खसै भूमि पर, तब पिय बाद गँवावा हो ॥५॥
सिर पर गागर बात सखिन सोँ, चित से गगर न छूटै हो ॥६॥
दास कबीर के निर्गुन कहरा, महरम होय सो बूझै हो ॥७॥

(२)

बिमल बिमल अनहद धुनि बाजै,
समुझि परै जब ध्यान धरै ॥ टेक ॥
कासी जाइ कर्म सब त्यागै,
जरा मरन से निडर रहै ।
बिरले समुझि परै वह गलिया,
बहुरि न प्रानी देँह धरै ॥ १ ॥
किँगरी संख झाँझ डफ बाजै,
अरुझा मन तहँ ख्याल करै ।
निरंकार निरगुन अबिनासी,
तीन लोक उँजियार करै ॥ २ ॥
इँगला पिँगला सुखमन सोधो,
गगन मँदिल मेँ जोति बरै ।
अष्ट कँवल द्वादस के भीतर,
वहँ मिलने की जुगत करै ॥ ३ ॥
जीवन मुक्ति मिले जेहि सतगुरु,
जन्म जन्म के पाप हरै ।
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो,
धिरज बिना नर भटकि मरै ॥४॥

॥ दस मुकामी रेख़ता ॥

चला जब लोक को सोक सब त्यागिया।
हंस को रूप सतगुरु बनाई ॥
भृंग ज्यों कीट को पलटि भृंगै किया,
आप सम रंग दै लै उड़ाई ॥ १॥
छोड़ि नासूत मलकूत को पहुँचिया,
बिस्नु की ठाकुरी दीख जाई।
इन्द्र कुबेर रंभा जहाँ नृत करैं,
देव तैंतीस कोटिक रहाई ॥ २ ॥
छोड़ि बैकुंठ को हंस आगे चला,
सून्य में जोति जगमग जगाई।
जोति परकास में निरखि निःतत्व को,
आप निर्भय भया भय मिटाई ॥ ३ ॥
अलख निर्गुन जेही बेद अस्तुति करै,
तीनहूँ देव को है पिताई।
भगवान तिन के परे सेत मूरत धरे,
भग की आनि[1] तिनको रहाई ॥ ४ ॥
चार मोकाम पर खंड सोरह कहे,
अंड को छोर ह्याँ तैं रहाई।
अंड के परे अस्थान आचिंत को,
निरखिया हंस जब उहाँ जाई ॥ ५ ॥
सहस औ द्वादसो रूह है संग में,
करत किलोल अनहद बजाई।

(१) क़दर।

तासु के बदन की कौन महिमा कहौं,
भासती देह अति नूर छाई ॥ ६ ॥
महल कंचन बने मनी ता में जड़े,
बैठ तहँ कलस अखंड छाजे ।
अचिंत के परे अस्थान सोहंग का,
हंस छत्तीस तहवाँ बिराजे ॥ ७ ॥

नूर का महल औ नूर की भूमि है,
तहाँ आनन्द सोँ द्वंद भाजे ।
करत किलोल बहु भाँति से संग इक,
हंस सोहंग के जो समाजे ॥ ८ ॥

हंस जब जात षट चक्र को बेधि के,
सात मोकाम में नजर फेरा ।
परे सोहंग के सुरति इच्छा कही,
सहस बावन जहाँ हंस हेरा ॥ ९ ॥
रूप की रासि[१] तें रूप उन को बनो,
नाहिँ उपमाहिँ दूजी निबेरा ।
सुर्त से भेंट के सब्द कि टेक चढ़ि,
देखि मोकाम अंकूर केरा ॥ १० ॥
सून्य के बीच मैं बिमल बैठक तहाँ,
सहज अस्थान है गैब केरा ।
नवो मोकाम यह हंस जब पहुँचिया,
पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा ॥ ११ ॥
तहाँ से डोरिमकर[२] तार ज्योँ लागिया,
ताहि चढ़ि हंस गो दै दरेरा ।

---

(१) ढेर । (२) मकड़ी ।

भये आनन्द सोँ फन्द सब छोड़िया,
पहुँचिया जहाँ सतलोक मेरा ॥ १२ ॥
हंसनी हंस सब गाय बजाय के,
साजि के कलस वोहि लेन आये ।
जुगन जुग बीछुरे मिले तुम आइ के,
प्रेम करि अंग सोँ अंग लाये ॥ १३ ॥
पुरुष ने दरस जब दीन्हिया हंस को,
तपनि बहु जन्म की तब नसाये ।
पलटि के रूप जब एक सोँ कीन्हिया,
मनहुँ तब भानु षोड़स उगाये ॥ १४ ॥
पुहुप के दीप पियूष[1] भोजन करै,
सब्द की देहँ जब हंस पाई ।
पुष्प के सेहरा हंस औ हंसिनी,
सच्चिदानन्द सिर छत्र छाई ॥ १५ ॥
दिपै बहु दामिनी दमक बहु भाँति की,
जहाँ घन सब्द की घुमड़ लाई ।
लगे जहँ बरसने गरज घन घोर के,
उठत तहँ सब्द धुनि अति सुहाई ॥ १६ ॥
सुनैं सोइ हंस तहँ जुत्थ के जुत्थ हैं,
एक ही नूर इक रंग रागे ।
करत बिहार मन भावनी मुक्ति मे,
कर्म औ भर्म सब दूरि भागे ॥ १७ ॥
रंक औ भूप कोइ परखि आवै नहीं,
करत किलोल बहु भाँति पागे ।

---

(१) अमृत ।

काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब,
छाड़ि पाखंड मन सब्द लागे ॥ १८ ॥
पुरुष के बदन की कौन महिमा कहौं,
जगत में उभय[1] कछु नाहिं पाई ।
चन्द्र औ सूर गन जोति लागै नहीं,
एकहू नख की परकास भाई ॥ १९ ॥
पान परवान जिन बंस का पाइया,
पहुँचिया पुरुष के लोक जाई ।
कहैं कबीर यहि भाँति सों पाइ हो,
सत्त की राह सो प्रगट गाई ॥ २० ॥

॥ राग जँतसार[2] ॥

(१)

सुरति मकरिया[3] गाड़हु हे सजनी--अहे सजनी ।
दूनौं रे नयनवाँ जोतिया लावहु रे की ॥ १ ॥
मन घरु मन घरु मन घरु हे सजनी--अहे सजनी ।
अइसन समइया फिरि नहिं पावहु रे की ॥ २ ॥
दिन दस रजनी हे सुख करु सजनी--अहे सजनी ।
इक दिन चाँद छपायल रे की ॥ ३ ॥
सँगहिं अछत पिय भरम भुलइली--अहे सजनी ।
मोरे लेखे पिया परदेस हँ रे की ॥ ४ ॥
नव दस नदिया अगम बहे सोतिया हो--अहे सजनी ।
थिरहिं पुरइनि[4] दह[5] लागल रे की ॥ ५ ॥

---

(१) दूसरा अर्थात सदृश । (२) जाँता या चक्की पर गाने की गीत । (३) चक्की का कीला । (४) बाई । (५) तलाव ।

फुल इक फुलले अनुप फुल सजनी--अहे सजनी।
तेहि फुल भँवरा लुभाइल रे की ॥ ६ ॥
सब सखि हिलि मिलि निज घर जाइब--अहे सजनी।
समुँद लहरिया समाइब रे की ॥ ७ ॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियाँ हो--अहे सजनी।
अब तो पिया घर जाइब रे की ॥ ८ ॥

(२)

अपने पिया की मैं होइबौं सोहागिनी--अहे सजनी।
भइया तजि सइयाँ सँग लागब रे की ॥ १ ॥
सइयाँ के दुअरिया अनहद बाजा बाजै--अहे सजनी।
नाचहिँ सुरति सोहागिनि रे की ॥ २ ॥
गंग जमुन के औघट घटिया हो--अहे सजनी।
तेहि पर जोगिया मठ छावल रे की ॥ ३ ॥
देहौँ सतगुरु सुतों के बिरवा हो--अहे सजनी।
जोगिया दरस देखे जाइब रे की ॥ ४ ॥
दास कबीर यह गवलैँ लगनियाँ हो--अहो सजनो।
सतगुर अलख लखावल रे की ॥ ५ ॥

॥ राग बसंत ॥

खेलन सतगुरु ऋतु बसंत। मुक्ति पदारथ मिले कंत ॥टेक॥
धरती रथ चढ़ि देखो देस। घर घर निरखो नृपनरेस ॥१॥
जोजन चार पैतरे फेर। बाँधि मवासा गढ़ मैं घेर ॥२॥
अधर निअच्छर गहो ढाल। भागि चलै जब धरो काल ॥३॥
सर[1] सुधारि घट कर कमान। चंद्राचला[2] गहि मारो बान ॥४॥

---

(१) तीर। (२) चिल्ला = कमान की डोर।

साधु संग रन करो जोर । तब घट छोड़ै चतुर चोर ॥५॥
ऐसा बिधि से लड़ै सूर । काल मवासी होय दूर ॥६॥
अधरनिअच्छरगहो डोर । जो निज मानो बचन मोर ॥७॥
धरतीतुरँग[1] होयअसवार । कहै कबीर भवउतरो पार ॥८॥

॥ राग होली ॥

(१)

सतगुरु दीन-दयाल पिरीतम पाइया ॥ टेक ॥
बंदीछोर मुक्ति के दाता, प्रेम सनेही नाम ।
साध संत के बसो अभिलाषा, सबबिधि पूरन काम ॥१॥
जैसे चात्रिक स्वाँती जल को, रटतु है आठो जाम ।
ऐसी सुरति लगी जिन सतगुरु, सो पाये सुख धाम ॥२॥
आनँद मंगल प्रेम चारि[2] गुरु, अमर करत हैं जीव ।
सुमिरन दे सतलोक पठाये, ऐसे समरथ पीव ॥३॥
चरन कमल सतगुरु को सेवा, मन चित गहु अनुराग ।
कहैं कबीर अस होरी खेलै, जा के पूरन भाग ॥४॥

(२)

ऐसी होरी खेल, जा में हुरमत लाज रहो री ॥ टेक ॥
सील सिँगार करो मोर सजनी, धीरज माँग भरो री ।
ज्ञान गुलाल लगावो सजनी, अमम घर सूझि परोरी ॥१॥
उठत धमार काया गढ़ नगरी, अनहद बेनु बजो री ।
फगुवा खेलूँ अपने साहिब संग, हिरदे साँच धरो री ॥२॥
खेती करो जग आइ कै साधो, चेला सिष न बटोरी ।
नइया अपने पार उतरन को, सतगुरु दया करो री ॥३॥
मने मने की सिर पर मेटुकी, नाहक बोझ मरो री ।
मेटुकि उतारि मिलो तुम पिय सोँ, सत्त कबीर कहो री ॥४॥

---

(१) थोड़ा । (२) आचार्य ।

(३)

माया भ्रम भारी सगरो जग जीति लियो ॥ टेक ॥
गज गामिनि कठोर है माया, संसय कीन्ह सिंगारा ।
लै के डारै मोह नदी में, कोइ न उतरै पारा ॥१॥
निज आँखिन में अंजन दीन्हा, पंडित आँखि में राई ।
जोगी जती तपी सन्यासी, सुर नर पकरि नचाई ॥२॥
गोरख दत्त बसिष्ठ ब्यास मुनि, खेलन आये फागा ।
सिंगी ऋषि पारासर आये, छोड़ि छोड़ि बैरागा ॥३॥
सात दीप और नवो खंड में, सब से फगुवा लीन्हा ।
ठाढ़ कबीर सों अरज करतु है, तुमहीं ना कछु दीन्हा ॥४॥

(४)

खेलो खेलो सोहागिनि होरी ।
चरन सरोज[1] पिया हित जानो, रज कै केसर घोरी ॥१
सोहँग नारि जहँ रंग रचो है, बिच में सुखमन जोरी ।
सदा सजीवन प्रेम पिया को, गहि लीजे निज डोरी ॥२॥
लिये लकुट कर बरन बिचारो, प्रेम प्रीति रँग बोरी ।
रँग अनेक अनुभव गहि राचो, पिय के पाँव परो री ॥३॥
कहैं कबीर अस होरी खेलो, कोई नहिं झकझोरी ।
सतगुरु समरथ अजर अमर हैं, तिन के चरन गहो री ॥४॥

॥ राग दादरा ॥

(१)

बलम सँग सोइ गइ दोइ जनी ॥ टेक ॥
इक ब्याही इक अरधो[2] कहावै, दूनोँ सुभग सुहाग भरी ॥१॥
ब्याही तो उँजियार दिखावै, अरधो ले अँधियार खड़ी ॥२॥
ब्याही तो सुख निँदिया सोवे, अरधो दुख सुख माथ धरी ॥३॥
कह कबीर सुनो भाइ साधो, दूनोँ पिया पियारि रहीं ॥४॥

---

(१) कमल (२) मरूफ, सुरैतिन ।

(२)

रमैया की दुलहिन ने लूटा बजार ॥ टेक ॥

सुरपुर लूटा नागपुर लूटा, तिन लोक मचि गइ हाहाकार ॥१॥

ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनि के परी पिछार[1] ॥२॥

सिंगी की मिंगी करि डारी, पारासर के उदर बिदार ॥३॥

कनफूँका चिदाकासी लूटे, जोगेसुर लूटे करत बिचार ॥४॥

हम तो बचिगये साहिब दया से, सब्द डोर गहि उतरे पार ॥५॥

कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, इस ठगनी से रहो हुसियार ॥६॥

ककहरा

[क] काया कुंज करम की बाड़ी, करता बाग लगाया।
किनका ता में अजर समाना, जिन बेली फैलाया ॥
पाँच पचीस फूल तहँ फूले, मन अलि[2] ताहि लुभाया।
वोहि फूलन के बिषै लपटि रस, रमता राम भुलाया ॥

मनभँवरा यह काल है, बिषै लहरि लपटाय।
ताहि संग रमता बहै, फिरि फिरि भटका खाय ॥१॥

[ख] खालिक की तो खबर नहीं कछु, खाब खयाल में भूला।
खाना दाना जोड़ा घोड़ा, देखि जवानी फूला ॥
खासा पलंग सेजबँद तकिया, तोसक फूल बिछाया ॥
नवल नारि लै ता पर पौढ़ा, काम लहर उमड़ाया ॥

लागी नारी प्यारि अति, छुटा धनी सोँ नेह।
काल आय जब ग्रासिहै, खाक मिलेगी देह ॥ २ ॥

[ग] गुरू कीजिये निरखि परखि कै, ज्ञान रहनि का सूरा।
गर्व गुमान माया मद त्यागे, दया छिमा सत पूरा ॥

---

(१) पीछे। (२) भँवरा।

गैल बनावै अमर लोक की, गावै सतगुरु बानी।
गज मस्तक अंकुस गहि बैठे, गुरुवा गुन गलतानी॥
पाप पुन्य को आस नाहिं, करम भरम से न्यार।
कृत्म पाखंड परिहरे, अस गुरु करो बिचार॥३॥
[घ] घट गुरु ज्ञान बिना अँधियारा, मोह भरम तम छाया।
सार असार बिचारत नाहीं, अमी धोख बिष खाया॥
घर का घिर्त रेत मैं डारै, छाछ ढूँढ़ता डोलै।
कंचन देके काँच बिसाहै[1], हरू गरू[2] नहिं तोलै॥
ज्ञान बिना नर बावरा, अंध कूर मतिहीन।
साँच गहै नहिं परखि कै, झूठै के आधीन॥४॥
[ङ] ङंभ मनै मत मानियो, सत्त कहौं परमारथ जानी।
उपजै सुख तब हृदय तुम्हारे, जब परखो मम बानी॥
ऊँचा नीचा कोइ नहीं रे, करम कहावै छोटा।
जासु के अंदर करकै नखरा, सोई माल है खोटा॥
ऊपर जटा जनेऊ पहिने, माला तिलक सुहाय।
संसय सोक मोह भ्रम अंदर, सकले मैं रहु छाय॥५॥
[च] चित से चेतहु चतुर चिकनियाँ, चैन कहा तुम सोया।
चतुराई सब भाड़ परैगी, जन्म अचेते खोया॥
चौथा पन तेरा अब लागा, अजहुँ चेत गुरु ज्ञान।
नहिं तो परैगो घोर अँधेरो, फिरि पाछे पछितान॥
ऐसे पाटन आइकै, सौदा करो बनाय।
जो चूकौ तुम जन्म यह, तो दुख भुगतौ जाय॥६॥
[छ] छन मैं छल बल सब निकसत हैं, जब जम छैकै आई।
छटपट करिहौ बिष ज्वाला तैं, तब कहु कौन सहाई॥

(१) मोल ले। (२) हलका भारी।

जम का मुगदर ऊपर बरसै, तब को करै उबारी ।
तात मातु भ्राता सुत सज्जन, काम न आवै नारी ॥
छूट्यो सर्ब सगाई, भया चोर का हाल ।
संगी सब न्यारे भये, आप गये मुख काल ॥ ७ ॥
[ज] जम के पाले पड़े जीव, तब कछू बात नहिं आवै ।
जोर कछू काबू नहीं, सिर धुनि धुनि पछितावै ॥
जब ले पहुँचावैं चित्रगुप्त पहँ, लिखनी लिखै बिचारि ।
दयाहीन गुरुविमुखी ठहरै, अग्नि कुंड लै डारि ॥
जन्म सहस अजगर को पावै, बिष ज्वाला अकुलाय ।
ता पाछे कृमि बिष्ठा कीन्हा, भूत खानि को जाय ॥८॥
[झ] झंखन झुरवन सबही छोड़ो, झमकि करो गुरु सेव ।
झाँई मन की दूर करो अब, परखि सब्द गुरु देव ॥
झगरा झूठ झाल झल त्यागो, झटक भजो सतनाम ।
झीन करो मन मेलो मंदिर, तब पावो बिस्राम ।
होइ अधीन गुरु चरन गहु, कपट भाव करि दूर ।
पतिब्रता ज्यों पिव को चाहै, ताके न दूजा कूर ॥९॥
[ञ] इस्क बिना नहिं मिलिहै साहिब, केतो भेष बनावै ।
इस्क मासूक न छिपै छिपाये, केतो छिपै छिपावै ॥
इत उत इहाँ उहाँ सब छोड़ो, निःचल गहु गुरु चरना ।
या से सुक्ख होय दुख नासै, मेटै जीवन मरना ॥
आदि नाम है जाहि पहँ, सोई गुरु है सार ।
जे कृतम कहँ ध्यावहीं, ते भव होय न पार ॥ १० ॥
[ट] टीम टाम बाहर बहुतेरे, दिल दासी से बंधा ।
करै आरती संख बाज धुनि, छुटै न घर कै धंधा ॥
टिकुली सेँदुर टकुवा चरखा, दासी ने फरमाया ।
कच्चे बच्चे ने माँगि मिठाई, मगन भया मन आया ॥

जिन सेवक पूजा दियो, ताहि दियो आसीस ।
जहाँ नहीं कछु तहँ भे ठाढ़े भस्म करैं जगदीस॥११॥
[ठ] ठग बहुतेरे भेष बनावैं, गले लगावैं फाँसी ।
स्वाँग बनाये कौन नफा है, जो न भजे अबिनासी ॥
ठोकर सहै गुरू के द्वारे, ठीक ठौर तब पावै ।
ठकठक जन्म मरन का मेटै, जम के हाथ न आवै ॥
मृतक होय गुरु पद गहै, ठीस[1] करै सब दूर ।
कायर तेँ नहिँ भक्ति ह्वै, ठानि रहै कोइ सूर ॥१२॥
[ड] डगमग तेँ तो काज सरै नाहिँ, अडिग नाम गुन गहिये।
डर मेटै तब बिषम काल का, अछै अमर पद लहिये ॥
डरते रहिये गुरू साधु से, डम्भि काम नहिँ आवै ।
डिम्भी होय के भवसागर मेँ, डहन मरन दुख पावै ॥
डेढ़ रोज का जीवना, डारो कुबुधि नसाय ।
डेरा पावो सत्त लोक मेँ, सतगुरु सब्द समाय ॥१३॥
[ढ] ढूँढत जिसे फिरो सो ढिंग है, तेरा तैँ उलटि निरेखो।
ढोल मारि के सबै चेतावोँ, सतगुरु सब्द बिबेखो ॥
तुम हो कौन कहाँ तेँ आये, कहँ है निज घर तेरा ।
केहि कारन तुम भरमत डोलो, तन तजि कहाँ बसेरा ॥
को रच्छक है जीव का, गहो ताहि पहिचानि ।
रच्छक के चीन्हे बिना, अंत होयगी हानि ॥ १४ ॥
[ण] निर्गुन गुनातीति अबिनासी, दया-सिंधु सुख-सागर।
निःचल निःठौर निरबासी, नाम अनादि उजागर ॥
निरमल अमी क्रांति अद्भुत छबि, अकह अजावन[2] सोई ।
नख सिख नाभि नयन मुख नासा, स्रवन चिकुर[3] सुभ होई ॥

---

(१) अकड़ । (२) बिना जामन के । (३) बाल ।

चिकुरन के उजियार तें, बिधु[1] कोटिक सरमाय।
कहा क्रांति छबि बरनौं, बरनत बरनि न जाय ॥१५॥
[त] ताहि पुरुष की अंस जीव यह, धर्मराय ठगि राखा।
तारन तरन आप कहलाई, बेद सास्त्र अभिलाखा ॥
तत्त्व प्रकृति तिरगुन से बंधा, नीर पवन की बारो।
धर्मराय यह रचना कीन्ही, तहाँ जीव बैठारी ॥
जीवहिं लाग ठगौरी, भूला अपना देस।
सुमिरन करही काल को, भुगतै कष्ट कलेस ॥ १६ ॥
[थ] थकित होय जिव भरमत डोले, चौरासी के माहीं।
नाना दुक्ख परै जम फाँसी, जरै मरै पछिताही ॥
थाह न पावै बिपति कष्ट की, बूड़ै संसय धारा।
भवसागर की बिषम लहर है, सूझै वार न पारा ॥
तन बिलखै[2] अघ योनि में, पड़ै जीव बिकरार।
सतगुरु सब्द बिचार नहिं, कैसे उतरै पार ॥ १७ ॥
[द] दुंद बाद है और देंह में, परिचै तहाँ न पावै।
नर तन लहि जो मोहिं गहै, तो जमके निकट न आवै ॥
दरस कराऔं सत्त पुरुष का, देंह हिरम्मर पाइहौ।
सुख सागर सुख बिलसो हंसा, बहुरि जोनि नहिं आइहौ॥
अपना घर सुख छाड़ि के, अँगवै[3] दुख को भार।
कहाँ भरम बसि परे जिव, लखै न सब्द हमार ॥ १८ ॥
[ध] धर्मराय को सबै पुकारै, धर्मैं चीन्ह न पावै।
धर्मराय तिहुँ लोकहिं ग्रासै, जीवहिं बाँधि झुलावै ॥
धोखा दै सब को भरमावै, सुर नर मुनि नहिं बाचै।
नर बपुरे की कौन बतावै, तन धरि धार सब नाचै ॥

---

(१) चन्द्रमा। (२) बिलकै, रोवै। (३) सहै।

असुर होय सतावही, फिर रच्छक को भाव।
रच्छक जानि के जपै जिव, पुनि वे भच्छ कराव ॥१९
[न] नि:भै निडर नाम लौ लावै, नकल चीन्हि परित्यागै
नाद बिंद तें न्यार बतायो, सुरति सोहंगम जागै॥
निराधार नि:तत्त्व निअच्छर, नि:संसय नि:कामी।
नि:स्वादी निर्लिप्त बियोपित, नि:चिंत अगुनसुख धामी॥
नाम-सनेही चेतहू, भाखौं घर की डोरि।
निरखो गुरु गमसुरतिसोँ, तब चलि तृन जम तोरि॥२०॥
[प] पाप पुन्य में जिव अरुझाना, पार कौन बिधि पावै।
पाप पुन्य फल भुक्तै तन धरि, फिर फिर जम संतावै॥
प्रेम भक्ति परमातम पूजा, परमारथ चित धारै।
पावन जन्म परसि पद पैहै, पारस सब्द बिचारै॥
पीव पीव करि रटन लगावै, परिहरि कपट कुचाल।
प्रीतम बिरह बिजोग जेहिं, पाँव परै तेहिं काल॥२१॥
[फ] फरामोस[1] कर फिकर फेलबद, फहम करै दिल माहीं।
परफुल्लित सतगुरु गुन गावै, जम तेहि देखि डेराही॥
फाजिल सो जो आपा मेटै, फना[2] होय गुरु सेवै॥
फाँसी काटै कर्म भर्म की, सत्त सब्द चित देवै॥
फिरै फिरै नर भरम बस, तीरथ माहिं नहाय।
कहा भये नर भोर के पीये, ओस तें प्यास न जाय॥२२॥
[ब] ब्रह्म बिदित है सर्ब भूत में, दूसर भाव न होय।
बर्त्तमान चित चेतै नाहीं, भूत भविष्य बिलोय॥
बड़े पढ़े ते बिषम बुद्धि लिये, बोलनहार न जोहै[3]।
ब्रह्म दुखित करि पाहन पूजै, बरबस आप बिगोहै[4]॥

---

(१) भुलाकर। (२) मृतक। (३) खोजै। (४) बिगाड़ै।

बन्दि परै नर काल के, बुद्धि ठगाइन जानि।
बन्दी छोरौं लैचलौं, जो मोहिं गहि पहिचानि ॥२३॥

[भ] भाड़ परै यह देस बिगाना, भवसागर अवगाहा[१]।
भक्त अभक्त सभन को बोरै, कोइ न पावै थाहा ॥
भच्छक आप लीला बिस्तारा, कला अनंत दिखावै।
भच्छक को रच्छक करि जानै, रच्छक चीन्हि न पावै ॥
भजै जाहि सो भच्छक, रच्छक रहा निनार।
भर्म चक्रमें परे जीव सब, लखै न सब्द हमार ॥२४॥

(म) मन मयगर[२] मद मस्त दिवाना, जीवहिँ उलटि चलावै।
अकरम करम करै मन आपहिँ, पीछे जिव दुख पावै ॥
मोह बस जीव मनहिँ नहिँ चीन्है, जानै यह सुखदाई।
मार परै तब मन ह्वै न्यारो, नरक परै जिव जाई ॥
मन गज अगुवा काल को, परखो संत सुजान।
अंकुस सतगुरु ज्ञान है, मन मतंग भयमान[३] ॥२५॥

(य) जो जिव सतगुरु सब्द बिबेकै[४], तौ मन होवै चेरा।
जुक्ति जतन से मन को जीतै, जियतै करै निबेरा ॥
जहँ लगि जाल काल बिस्तारा, सो सब मन की बाजी।
मनै निरंजन धर्मराय है, मन पंडित मन काजी ॥
गुरु प्रताप भौ जोर जिव, निर्बल भौ मन चोर।
तस्कर संधि न पावही, गढ़-पति जगै अँजोर ॥२६॥

(र) रहनि रहै रजनी नहिँ ब्यापै, रतै मतै गुरु बानी।
राह बतावैँ दया जानि जिव, जा तैँ होय न हानी ॥
रमता राम काम करि अपना, सुपना है संसारा।
रार रोर तजि रच्छक सेवो, जा तैँ होय उबारा ॥

---

(१) अथाह (२) मस्त हाथी। (३) भयानक। (४) बिचारै।

रैन दिवस उहवाँ नहीं, पुरुप प्रकास अँजोर।
राखो तेई ठाँव जिव, जहाँ न चाँपै चोर ॥ २७ ॥

(ल) लगन लगी जेहि गुरु चरनन की, लच्छन प्रगट तेहि ऐसा।
लगन लगी तब मगन भये मन, लोक लाज कुल कैसा ॥
लगा रहै गुरु सुरत परेखै, निज तन स्वार्थ न सूझै।
लागै ठोकर पीठ न देवै, सूरा सन्मुख जूझै ॥
लहर लाज मन बुद्धि को, निकट न आवै ताहि।
लोटै गुरु चरनन तरे, गुरु सनेह चित जाहि ॥२८॥

(व) वाके निकट काल नाहिं आवै, जो सत सब्द समाना।
वार पार की संसय नाहीं, वाही में मन माना ॥
वासिलबाकी का डर नाहीं, वारिस हाथ बिकाना।
वारिस को सौंपै अपने तईं, वाही हृदय समाना ॥
वाकिफ हो सो गमि लहै, वाजिब सखुन अजूब।
वाही की करु बन्दगी, पाक जात महबूब ॥२९॥

(श) शहर चोर घनघोर करेरे, सोवै सब घरबारी।
शोर कर निर्भरमै सोवै, लागी बिषम खुमारी ॥
साहिब सेती फेर दिल अपना, दुनियाँ बीच बँधाया।
साला साली ससुरा सरहज, समधी सजन सुहाया ॥
सतगुरु सब्द चेतावहीं, समुझि गहै कोइ सूर।
सम बल लीजे हाथ करि, जाना है बड़ दूर ॥ ३० ॥

(ष) खलक सयाना मन बौराना, खोय जान निज कामा।
खबर नहीं घर खरच घटाना, चेतै रमता रामा ॥
खोलि पलक चित चेतै अजहूँ, खाविंद सों लौ लावै।
खाम खयाल करि दूरि दिवाना, हिरदे नाम समावै ॥
खाल भरी है बायु तें, खाली होत न बार।

खैर[1] परै जेहि काम तें, सो करु बेगि बिचार॥३१॥

(स) सहज सील संतोष धरन[2] धर, ज्ञान बिबेक बिचार।
दया छिमा सतसंगति साधो, सतगुरु सब्द अधार॥
सुमिरन सत्त नाम का निसदिन, सूर भाव गहि रहना।
समर[3] करै औ जोर परै जो, मन के संग न बहना॥
सैन कहा समुझाय कै, रहनी रहै सो सार।
कहे तरै तो जग तरै, कहनि रहनि बिनु छार॥३२॥

[ह] हरि आवै हरि नाम समावै, हरि मोँ हरि को जानै।
हरि हरि कहे तरै नहिँ कोई, हरि भज लोक पयानै॥
हरि बिनसै हरि अजर अमर है, हरी हरी नहिँ सूझै।
हाजिर छाँड़ि बुत्त[4] को पूजै, हसद[5] करै नहिँ बूझै॥
हम हमार सब छाड़ि कै, हक्क राह पहिचान।
हासिल हो मकसूद तब, हाफिज अमन अमान॥३३॥

[क्ष] छैल चिकनियाँ अभै घनेरे, छका फिरै दीवाना।
छाया माया इस्थिर नाहीं, फिरि आखिर पछिताना॥
छर अच्छर निःअच्छर बूझै, सूझि गुरू परिखावै।
छर परिहरि अच्छर लौ लावै, तब निःअच्छर पावै॥
अच्छर गहै बिबेक करि, पावै तेहि से भिन्न॥
कहै कबीर निःअच्छरहिँ, लहै पारखी चीन्ह॥३४॥

---

(१) कुशल। (२) धारना। (३) युद्ध। (४) मूरत। (५) द्रोह।

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की
उपयोगी हिन्दी-पुस्तकमाला

गृहकुसुम—इस पुस्तक में कई छोटी बड़ी कहानियाँ संग्रहित हैं जो बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद हैं। पढ़िये और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द लूटिये। मूल्य ॥)

सचित्र विनय पत्रिका—गोस्वामी जी की इस दुर्लभ पुस्तक का राम मय टीका ३ चित्र और राग परिचय के सिर्फ़ २॥) है सजिल्द ३)

करुणा देवी—औरतों को पढ़ाइये, बहुत ही रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास है मूल्य ॥=)

हिन्दी कवितावली—यह उत्तम कविताओं का संग्रह बालक बालिकाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य -)

हिन्दी महाभारत—सरल हिन्दी में कई सुंदर रंगीन चित्रों के सहित १८ पर्वों का साराँश छपा है। मूल्य ३)

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है अन्त में गूढ़ शब्दों का कोश भी है। मूल्य ॥=)

उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा—(सचित्र) इस उपन्यास को पढ़ कर देखिये कैसी अच्छी सैर है। बार बार पढ़ने का ही जी चाहेगा। मूल्य ॥)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। ज़रूर पढ़िये, और अपने अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी—यह एक विचित्र जासूसी उपन्यास है, पढ़ कर देखिये, जी प्रसन्न हो जाता है! साथ ही अपूर्व शिक्षा भी मिलती है। स्त्रियों के लिये अत्यंत लाभदायक है। सजिल्द मूल्य १।)

सचित्र द्रौपदी—पुस्तक में देवी द्रौपदी के जीवनचरित्र का अति उत्तम रीति से वर्णन किया गया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के लिये उपयोगी है। मूल्य ॥।)

कर्मफल—यह सामाजिक उपन्यास बड़ा शिक्षाप्रद और रोचक है। मूल्य ॥।)

दुःख का मीठा फल—इस उपन्यास के नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ॥।=)

लोक संग्रह अथवा संतति विज्ञान-(सचित्र) मूल्य ॥।=)

हिन्दी साहित्य प्रदीप-कक्षा ५ व ६ के लड़कों के लिए (सचित्र) मूल्य ॥=)

काव्य निर्णय—काव्य प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त ही लाभदायक पुस्तक है। दास कवि का बनाया हुआ इस उत्तम ग्रंथ का ऐसी सरल टीका-टिप्पणी आज तक न हुई थी। मूल्य १।)

सुमनोऽञ्जलि प्रथमभाग—हिन्दू धर्म सम्बन्धी अपूर्व और अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है। इसके लेखक मिश्रबन्धु महोदय हैं। सजिल्द मूल्य ॥।=)

हिन्दीसाहित्य सुमन—छोटे लड़कों के लिए यह पुस्तक अपूर्व है (सचित्र) मूल्य ॥)

हिन्दी साहित्यसागर—कक्षा ३ व ४ के लिये (सचित्र) मूल्य ।–)॥

सावित्री और गायत्री—पं० चन्द्रशेखर शास्त्री की लिखी है। लेखक के नाम ही से इस उपन्यास की उपयोगिता प्रगट हो रही है। मूल्य ॥)

सचित्र रामचरितमानस—यह असली रामायण बड़े रूप में टीका सहित है। भाषा बड़ी सरल और लालित्य पूर्ण है। यह रामायण २० सुन्दर चित्रों, मानस पिंगल और गोसाईं जी की जीवनी सहित है। पृष्ठ संख्या १४५०, मूल्य लागत मात्र केवल ८) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण भी हम ने जनता के लाभ के लिए छापा है सचित्र और सजिल्द १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं।

प्रेम तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास—(प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥।=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने योग्य, मोटे अक्षरों में बहुत शुद्ध छपा है। मूल्य –)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के कुल ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

संदेह—यह मौलिक क्रांतकारी उपन्यास अनूठा और बिलकुल नया है। दाम ॥।)

चित्र माला—अति सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रोंका संग्रह है। मूल्य प्रथमभाग ॥।)

चित्रमाला—अति सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य द्वितीय भाग का ॥।)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ६०० के है। इसमे अति सुन्दर १० रंगीन और ७ सादे चित्र हैं। चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनोमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभ दायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत बँधी हुई है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

पता—मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

गरीबदास जी की बानी	...	...	१।-)
रैदास जी की बानी	...	...	॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	...	...	।≥)॥
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	...	...	।-)
दरिया साहिब (माड़वाड़ वाले) की बानी	...	...	।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	...	...	॥≥)॥
गुलाल साहिब की बानी	...	...	॥।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	...	...	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	-)
यारी साहिब की रत्नावली	...	...	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	...	...	।)
केशवदास जी का अमीघूँट	...	...	-)॥
धरनी दास जी की बानी	...	...	।=)
मीरा बाई की शब्दावली	...	...	॥)
सहजोबाई का सहज-प्रकाश	...	...	।≡)॥
दया बाई की बानी	...	...	।)
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी]	...	...	१॥)
[प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]			
संतबानी संग्रह, भाग २ [शब्द)	...	...	१॥)
[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]			
		कुल	३४-)
अहिल्या बाई	...	...	≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी, शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर,

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग ।